धरती कहती है...!!

जनम से लेकर आज तक,
कहना चाहती थी एक ही बात.....
लेकिन क्या करें,
कोई सुना ही नहीं !!

इस जिंदगी को बिताते हुए,
हो गया है कई साल।
लेकिन कभी न उठा पाई...
मैं एक आसान सा ~~कठिन~~ सवाल।
ये वो सवाल है जिससे रुक जायेंगे दिल की धड़कन
ये वो सवाल है.....
जिससे ~~रुक~~ मच जायेंगे मन में झंझल

क्यूँ तड़पाते है मुझे इतने!?
क्या गलती की है मैंने?
सिर्फ एक ही चाहत है मेरी,
खतम हो जानी है बिना देरी !!

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

Item Code: 641 Participant Code: 101

याद रखना मेरी यह बात....
खतम होने से मेरा, छुट जायँगे मेरा साथ।
यानी छुट गया तुझसे,
तेरा खुद का साथ।
है नहीं मैं कोई और,
हूँ मैं तुम्हारा अपनी माँ,
हूँ मैं तुम्हारा थकलाँती माँ,
हूँ मैं तुम्हारा धर्ती माँ।
मुझे जो कहना था
है वो एक पैसी बात,
बचा लो मुझे अभी...
वर्णा हो जायगा बहुत देर।
कभी न सोचा थे,
की प्यार का नतीजा है बरबादी !!
पर सुनो मेरी यह बात,
मेरी बरबादी तेरा विनाश !!

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

जलाया है तुमने मुझे
अपने क्रोध के आग में।
रुलाया है तुमने मुझे
अपने आँख में पट्टी बाँधकर।
मुझे जो कहना था, वो किसी ने सुना नहीं,
वो किसी से भी सुना नहीं...
अब सहना पड़ेगा सबको
मेरा क्रोध अश वार।
है वो एक ऐसी वार
जिससे बदल जाएँगे सब एक बार....
है वो एक ऐसी बदलावट
नाम है उसका मृत्यु!! वापस आना है असंभव
कह रही वो बात फिरसे !!
सुन लो वो ध्यान से.....
"दो मानव !!! बदल दो अपनी राह
मोड़ दो अपनी शस्ता
मत करो मुझे बरबाद
ले लो चैन की साँस..."